पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक समीक्षा एवं आलोचना का महत्व

डॉ. प्रीतेश आचार्य

संगीत के विषय में लिखने वाले प्रायः अधिकांशतः पत्रकार सांगीतिक ज्ञान से निरपेक्ष होते है। वे यह नही जानते कि पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में कार्यक्रम में क्या विशेष और कैसा प्रस्तुत किया जा रहा है। संगीतशास्त्र में वर्णित उचित और अनुचित गुण–अवगुण के मानदण्ड से पूर्णतया अनभिज्ञ ऐसे लोग न जाने किस अधिकार से हर कार्यक्रम के छोटे–बड़े किसी व्यक्ति के लिए बड़े से बड़े शब्द खर्च कर ड़ालते हैं। कार्यक्रम देने वाले का नाम 1⁄4कभी–कभी गुरू का भी नाम1⁄2, राग, शैली, घराना, राग–ताल का नामोल्लेख करते हुए यदि अपने स्वागत–सत्कार उपहार से खुश हुए ता प्रशंसा में सभी शब्द लिख मारे अन्यथा कार्यक्रम असफल, प्रभावशून्य, नीरस, उबाऊ और खुश हुए तो नर्सरी स्कूल से लेकर देश के शीर्षस्थ व्यक्ति के लिए एक समान शब्दों का उपयोग किया जाता है।